वैश्विक आतंकवाद का गाँधीवादी विकल्पों में समाधान

डॉ. संजय कुमार मण्डावत, – व्याख्याता, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, टोडाभीम

परिचय – आतंकवाद वर्तमान विश्व की सबसे विकट समस्याओं में से एक है। आतंकवाद का मूल प्रयोजन– जन समुदाय एवं मानव अधिकारों को आघात पहुँचाना या आंतक, भय एवं दहशत फैलाना है। आतंकवाद जाति, समाज व किसी भी राष्ट्र की प्रगति में बाधक है। ऐसे में यदि विकास की अवधारणा में मानव–मात्र के प्राकृतिक अधिकारों को भी सम्मिलित कर लिया जाए तो आतंकवाद का उन्मूलन सम्पूर्ण विश्व समुदाय के विकास के लिए अवश्यम्भावी है। आतंकवाद को जड़ से मिटाना असंभव है फिर भी विश्व के सभी राष्ट्र इसके समाधान का हल ढूँढने में लगे हैं तथा वैश्विक स्तर पर इसके समाधान के लिए विश्व समुदाय, संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से अहिंसात्मक तरीकों से इसका अन्त चाह रहे हैं और इसी दिशा में सभी राष्ट्रों का महत्त्वपूर्ण प्रयास साकार होता नजर आ रहा है जहाँ उन्होंने भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया और इस रूप में सभी राष्ट्रों ने गाँधी के मूल्यों पर विश्वास कर यह जताया कि आतंकवाद जैसे कलंक को मिटाने के लिए गाँधीवादी मूल्य महत्वपूर्ण रूप से कारगर साबित होंगे।

'आतंकवाद' लेटिन भाषा के शब्द टेर्र से बना है, जिसका अर्थ है, समाज में हिंसक कार्यों और गतिविधियों से जनमानस में भय की स्थिति पैदा कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास करना। 'आतंकवाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1931 में ब्रुसेल्स में दण्ड विधान के तीसरे सम्मेलन में किया था, जिसके अनुसार जीवन में भौतिक अखण्डता अथवा मानव स्वास्थ्य को खतरे में डालने वाला या बड़े पैमाने पर सम्पत्ति को हानि पहुंचाने वाला कार्य करना, जान बूझकर भय का वातावरण उत्पन्न करना आतंकवाद है। इस प्रकार से आतंकवाद समाज के मानव–समुदाय द्वारा संचालित ऐसी मानव विरोधी गतिविधियां हैं, जो कि उसी समाज के मानव–समुदाय के विरूद्ध लूट, अपहरण, बम–विस्फोट और हत्या जैसे जघन्य अपराधों का कारण बनती है।

गांधीवाद यह समझाता है कि हिंसा स्वतः उत्पन्न नहीं होती, यह तो सांस्कृतिक सोच और सभ्यता की गत संरचना का अवश्यम्भावी परिणाम है। मनुष्य स्वभाव से हिंसा नहीं चाहता है। हिंसा के कारण होते हैं। जब तक अभाव, शोषण एवं विषमता रहेगी, असंतोष को मिटाना असंभव है, लेकिन केवल संगीनों के बल पर समाज की व्यवस्था में निहित अंकिचनता, बेरोजगारी और शोषण से उत्पन्न असंतोष के ज्वालामुखी को रोकना संभव नहीं है। इसके लिए एक ऐसे शांत दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो सामाजिक–आर्थिक विषमता को संतुलित करने के लिए जन–जन को विचार व कार्य दोनों में ही सकारात्मकता दे सके और इस सन्तुलन व सकारात्मकता का किसी भी व्यक्तित्व में समावेश केवल अहिंसा से ही संभव है और यही आतंकवाद के निराकरण का स्थायी समाधान है।

शांति व अहिंसा के विकल्पहीन अस्त्र से महात्मा गांधी ने विश्व के सर्वशक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेशवाद से भारत को स्वतंत्रता की हवा में सांस लेने का सुअवसर प्रदान किया। महात्मा गांधी का राजनैतिक अस्त्र था–शांतिपूर्ण असहयोग आन्दोलन तथा बहिष्कार सविनय अवज्ञा आंदोलन। जिन से महात्मा गांधी ने ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ों को हिला दिया था तथा एशिया एवं अफ्रीका के उपनिवेशों को

स्वतंत्र करने को बाध्य कर दिया था। इन्होंने विश्व मार्क्सवादी हिंसा के स्थान पर लोकतांत्रिक शांति, अहिंसा तथा त्याग एवं बलिदान का मार्ग चुना था। इसी गांधीवादी दर्शन के अस्त्र का प्रयोग कर मार्टिन लूथर, किंग जूनियर ने संयुक्त राज्य अमेरिका में अश्वेतों अर्थात नीग्रों समुदाय को त्याग एवं बलिदान से नागरिक अधिकार दिलाया था तथा दक्षिण अफ्रीका एवं रोडेशिया की सरकारों ने भी रंगभेद नीति को बदला तथा अफ्रीका महादीप में लोकतंत्र की लहर पनपी। जिससे वहाँ के नागरिक अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए।

21 वीं शताब्दी में आतंकवाद के उन्मूलन व मानवाधिकारों की स्थापना हेतु अहिंसा ही एक मात्र विकल्प है। महात्मा गांधी ने अहिंसा के विषय में, जो चिंतन और प्रयोग किये हैं, उस पर सुकरात से लेकर बुद्ध, महावीर, जीसस, क्राइस्ट, टॉल्सटाय, रस्किन, थोरो और अब्राहम लिंकन आदि अनेक लोगों के प्राण हैं, और गांधी ने सभीं के विचारों को लेकर अपने कुछ मौलिक चिंतन और प्रयोग को इस प्रकार रखा है कि अहिंसा के पुरोधा के रुप में वे विश्व–परिदृश्य पर स्थापित हो गये। अहिंसा की दीर्घकालीन परम्परा में इसे अध्यात्म से जोड़ा गया है, इसिलए सभी धर्मों में अहिंसा, की सुस्पष्ट अवधारणा पायी जाती है। चाहे वेद का शांति मंत्र हो या जैनों की अहिंसा व बुद्ध की करूणा, इस्लाम की रहमत और शांति की भावना हो या ईसाईयत में शांति को देवत्य के वरदान के रूप में देखना– ये सभी सिद्ध करते है कि अहिंसा अध्यात्म और धर्म से अनुबंधित है। यदि अहिंसा को विश्लेषत किया जाये तो हम पाते है कि सामान्य अहिंसा का अर्थ हिंसा या हत्या न करना है, लेकिन गांधीजी ने अहिंसा की इससे व्यापक परिभाषा बताते हुए कहा कि किसी को न मारना तो अहिंसा का एक अंग है। अहिंसा इसके अतिरिक्त कुछ और भी है, किसी के प्रति कुविचार विद्वेष या क्रोध न रखना, किसी का अहित न चाहना, किसी की वस्तु पर अधिकार करने की अनाधिकार चेष्टा न करना, मिथ्या भाषण आदि भावनाओं का त्याग भी अहिंसा है। इसके अतिरिक्त वाणी और संवेगो पर नियन्त्रण रखना भी अहिंसा ही है। अहिंसा नकारात्मक ही नहीं वरन सकारात्मक भी होती है। अहिंसा में चार मुख्य तत्व हैं प्रेम, धैर्य, अन्याय का विरोध और वीरता। गांधीजी की अहिंसा प्रेममय है, जो आतंकवाद के समाधान व मानवाधिकारों के लिए कारगर सिद्ध होगी।

यह एक मूल प्रश्न है कि क्या आतंकवाद की हिंसा का जवाब हिंसा से ही दिया जा सकता है या फिर इसका कोई और भी समाधान है ? इस तरह के सवाल आज कई व्यक्तियों के दिमाग में उठ रहे हैं। गॉधीवादी और सर्वोदय विचारधारा के लोग हिंसा की काट हिंसा को नहीं मानते, उनके अनुसार घृणा से घृणा एवं आग से आग तथा हिंसा से हिंसा बढती है तथा इनका समाधान आग के लिए पानी, घृणा के लिए प्रेम तथा हिंसा के लिए केवल और केवल मात्र अहिंसा ही समाधान है। गॉधीजी के अनुसार, आतंक का जवाब अहिंसा से देना कायरता नहीं यह तो साहस और शौर्य का पर्याय है एक बन्दूकधारी के सामने बन्दूक हाथ में लेकर सामना करना साहस का काम हो सकता है, लेकिन एक बन्दूकधारी का निहत्थे बिना तनी अंगुली उठाए ही सामना करने के लिए अदम्य साहस और नैतिक बल की आवश्यकता है। अहिंसा बहादुरों का अस्त्र है। अतः हमें वर्तमान में पूरे विश्व में फैल रहे घृणा, हिंसा, अविश्वास के वातावरण बदलने के लिए महात्मा गॉधीजी के विचारों पर अमल करना चाहिये। अहिंसक तरीके से हिंसा का

मुकाबला करना मनुष्य जीवन का सबसे बडा वरदान है। हिंसा को अहिंसा से ही जीता जा सकता है। एक बार एक अंग्रेज वायसराय ने कहा था गांधी अगर हिंसात्मक लडाई लडें तो उन्हें हम कुचल सकते हैं, लेकिन जब वह चूल्हे, चक्की और चरखे की बात करता है, तो उसके इस अहिंसात्मक शस्त्रों से लडने की शक्ति ब्रिटिश सल्तनत में भी नहीं है।

इसके अलावा आतंकवाद के समाधान के रूप में गांधीवादी विकल्पों में उनके सत्याग्रह तथा ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त प्रमुख हैं, इनके सत्याग्रह के सिद्धान्त से आशय है, सत्य का आग्रह अर्थात सभी को सत्य बोलना चाहिए, क्योंकि झूँठ बोलने से मानव की प्रकृति में बदलाव आता है तथा अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु हिंसा की ओर उन्मुख होने लगता है, जो आतंकवाद की पहली सीढ़ी है। इसके साथ ही गांधीजी का ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त भी आतंकवाद को रोकने में सहायक है, क्योंकि यदि समाज में धन का समान वितरण होगा तो सभी लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चोरी और हत्याएं नहीं करेंगे तथा सभी मिल–झुलकर देश एवं समाज के विकास में सहयोग करेंगे। इस प्रकार सामाजिक–आर्थिक विषमता को दूर करता आतंकवाद के कारणों का अन्त है जो गाँधीवाद सुझाता है।

आतंकवाद का सही उत्तर हर स्तर पर शांति शिक्षा को समुचित तरीके से लागू करना है और गाँव–गाँव एवं मुहल्ले–मुहल्ले में शांति–सेना को खड़ा करना है। हिंसा दमन में पुलिस तंत्र और शासन तंत्र दोनों असफल होते जा रहे हैं। इसलिए लोकतंत्र पर भी सैनिक तानाशाही का खतरा बढ़ता जा रहा है। यदि हर विद्यालय में शांति–सेना की अनुगूँज होने लगे और हर ग्राम, शहर में नौजवान एवं नवयुवतियां शाति सेना का प्रशिक्षण लेकर समाज रक्षक की तरह खड़े हो जाये, तो एक नयी सभ्यता का उदय होगा। इससे पुलिस प्रशासन पर पड़ने वाला भारी आर्थिक बोझ भी कम होगा और लोकतंत्र को भी मुशर्रफ जैसे अन्य सैनिक शासकों के खतरों से बचाया जा सकेगा।

आने वाला युग निश्चय ही शांति का युग होगा, क्योंकि मानवता हिंसा की कीमत चुकाने की शक्ति नहीं रखती। हिंसा तो प्रतिहिंसा पैदा करती है, जिसका कभी अंत ही नहीं होता है। हिंसा के पथ पर जाकर हम मानवीय सभ्यता व मानवीयता का अभिरक्षण नहीं कर सकते। इतिहासवेत्ता भी कह रहे हैं कि मानवीय विकास क्रम में हमने आदमखोर मानव से निरामिष भोजी मानव की यात्रा पूरी की है, फिर हमें संघर्ष के लिये हिंसा के उपकरण के विकल्प के रूप में सत्याग्रह का विकल्प मिला। उसी प्रकार आतंकवाद के निर्मूलन के लिये शांति की भावना, शाति की योजना और शांति की शिक्षा के अलावा कोई विकल्प नहीं है। निःशस्त्रीकरण, अहिंसात्मक साधनों, विक्रेन्द्रीकरण, स्वावलम्बन और अपरिग्रह युक्त सादा जीवन जीने की शैली– ये गांधी और लोहिया की वैकल्पिक मानव सभ्यता के सूत्र थे। इसके अलावा बापू ने स्वयं कहा था, कि सत्य, अहिंसा और भाईचारा ये तीनों चीजें उनका आविष्कार नहीं है। उन्होनें अपने समय की जरूरतों के मुताबिक इन्हे आजमाया है। कैसे एक सर्वशक्तिमान तानाशाही हुकूमत की बन्दूकों को अहिंसक तरीके से शान्त कर दिया जा सकता है, इसका सफल प्रयोग दुनियां में किसी ने यदि किया है तो उस व्यक्ति का नाम है– महात्मा गांधी। यदि वर्तमान भारत के संदर्भ में भी देखा जाये तो अन्ना हजारे जैसे जागरूक, समय की नब्ज पहचानने वाले चिन्तक व समाज सेवक के विचार भी उल्लेखनीय है। इनके अनुसार गांधी आज भी

प्रासांगिक है, तभी तो हम गांधी को याद करने के लिए मजबूर है। अमीरी–गरीबी का फासले बढ़ रहे है। गाँव में हर किसी को रोटी नहीं मिल रही है, भूखे पेट शान की बातें नहीं की जा सकती। मानव के अधिकारों के साथ प्रकृति के अधिकारों का भी हनन हो रहा है। इससे लग रहा है कि एक दिन विनाश होगा। पेट्रोल–डीजल खत्म हो रहे हैं, समाज में भ्रष्टाचार और आतंकवाद लगातार बढ़ रहा है, सिर्फ गरीबों का शोषण कर तरक्की नहीं कर सकते। गांधीजी की सोच थी कि प्रकृति ने जो हमें दिया है, उसका इस्तेमाल हमें अपनी सीमित उपयोगिता के आधार पर करना चाहिए, न कि उसे नष्ट करना चाहिए, लेकिन वर्तमान समाज उनकी सोच के विपरीत चल रहा है, तथा इसी सोच में हमें बदलाव लाना होगा, तभी जाके मानव व प्रकृति के अधिकारों के हनन से निजात पाया जा सकता है।

इस प्रकार समस्त विश्लेषण के बाद कहा जा सकता है कि मनुष्य ने मानवता रूपी जिस इमारत का निर्माण किया है। आतंकवाद इसी मानवता रूपी इमारत को गिराने का लक्ष्य है। आतंकवाद विचारधारा आपसी भाई–चारा, सहअस्तित्व, समानता, सहानुभूति, विकास, प्रगतिशील चेतना एवं इन सबसे उपर मानव–अधिकारों के विरूद्ध बहती चली जा रही है। आतंकवाद लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा होने के साथ–साथ लोकतांत्रिक समाजों को अस्थिर करने की कार्यवाही भी है। भले ही आज विश्व समुदाय के सामने आतंकवाद जैसी समस्या पैदा हो गई हो, परन्तु विश्व समुदाय मानवता पर लगे इस कलंक से छुटकारा भी पाना चाहता है। आतंकवाद का सामना आज कोई एक राष्ट्र नहीं कर सकता, इसलिए विश्व बिरादरी को एक मंच पर आना ही होगा, एवं इस की भूमिका मुख्य रूप से संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्था में देखा जा सकता है। महात्मा गांधी के आदर्श पत्थर की लकीर के समान हैं, किन्तु सच यही है कि आज पहले से भी कहीं अधिक दुनिया को बापू के सिद्धांतों पर चलने की आवश्यकता लगने लगा है। यदि सही मायने में दुनिया में अमल–चैन की जरूरत है, तो गांधीवादी सच्चाई की ओर सबको लौटाना ही होगा। यदि आतंकवाद के खतरों का सामना करना है तो शांति और अहिंसा की बुनियाद मजबूत करनी ही होगी। आज यदि आतंकवाद और सांप्रदायिकता जैसे समस्याऐं सिर उठा रही हैं, तो उसके मूल में कमजोरी यही है कि गांधीवादी शक्तियां कमजोर पड़ गई हैं। खेद की बात है कि आज गांधी जी का नाम लेने वाले और उनकी पूजा करने वाले तो बहुत नजर आने लगे हैं परन्तु बापू की नीतियों का वास्तविक अनुसरण करने वाले घटते चले जा रहें हैं। गांधी जी के काम को आगे बढ़ाने के लिए खादी और चरखा ही काफी नहीं हैं, बल्कि इस मूल भावना से जुड़ना होगा कि आज भी आतंकवाद जैसी समस्या का समाधान गांधीवादी सिद्धान्तों को अपना कर ही किया जा सकता है। अतः गाँधीवादी विचारधारा के अनुसार आतंकवाद के विरूद्ध मानव के प्राकृतिक अधिकारों का संरक्षण करना, प्रत्येक राष्ट्र की आधारभूत आंकाक्षा है जिसका समाधान गाँधीवाद के द्वारा ही संभव है तथा इस प्रयास प्रत्येक व्यक्ति द्वारा जीवन में सत्य की अवधारणा को अपनाकर और अहिंसक प्रवृति का प्रसार करके ही किया जा सकता है। बापू के बताए रास्तों पर चलना बेहद कठिन चुनौती भरा लग सकता है, पर जो इस मार्ग पर चलते हैं, उन्हें कोई भय नहीं सताता और वे हर तरह के तनाव से मुक्त रहकर आतंकवाद से रहित विश्व में अहिंसात्मक समाज की स्थापना कर सकते है जहां मानव के अधिकारों के सुखद और विकसित भविष्य की कल्पना की जा सकती है।

संदर्भ–सूची–

- मिश्रा, आर.पी.–रि–डिस्कवरिंग गांधी–कन्सेप्ट, पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2007
- तिवारी, कनक–हिन्द स्वराज का सच–सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
- शर्मा,बी0एम0–गांधी दर्शन के विविध आयाम–राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007
- सिंह, रामजी–गांधी दृष्टि, कामनवैल्थ पब्लिशर्स, 2004
- अनुराग गंगल–गांधी एण्ड टेररिज्म, जम्मू कश्मीर, 2009
- मानचन्द्र खण्डेला–अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर, 2002
- वीरेन्द्र कुमार गौड़– विश्व में आतंकवाद, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
- देसाई, जतिन–इण्डिया एण्ड यू0 एस ऑन टेररिज्म, कॉमनवैल्थ, नई दिल्ली, 2000
- दृष्टिकोंण मंथन– गांधीवाद से गांधीगिरी तक, गांधी को कोन मार सकता है।
- रत्तू, कृष्ण कुमार– समग्र गांधी दर्शन, गांधी चिन्तन और वर्तमान प्रसंग।